MAHANTH MAHADEVANAND MAHILA MAHAVIDYALAYA, ARA

ACTIVITY REPORT

Name of the Department: **Hindi**

Name of activity: Special program on **Nirala and Raidads Jayanti**

Level of activity: **Departmental**/Institutional/State/National/International

Date of activity: **01.03.2021**

Head of The department: **Dr. Sudha Niketan Ranjani**

Name of Resource person/s: **1. Prof Diwakar Pandey**

2. Prof. Durgvijay Singh

Number of teacher participated: **24**

Number of students participated: **31**

Fruitful Outcome of the activity:

महिला कॉलेज के हिंदी विभाग की तरफ से रैदास एवं निराला की जन्म शताब्दी पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें रैदास एवं निराला के जीवन,व्यक्तित्व और उनके साहित्यिक योगदान से छात्राएं परिचित हुईं। दोनों ही कवियों पर विशेषज्ञों ने विस्तारपूर्वक व्याख्यान दिया। दोनों ही कवि स्नातक की कोर्स में भी हैं। अतः व्याख्यान के माध्यम से छात्राएं लाभान्वित हुईं।

Signature

MEDIA COVERAGE/PHOTOGRAPHS

महंथ महादेवानंद महिला कॉलेज में निराला व रैदास की जन्मशताब्दी मनी

आरा | महंथ महादेवानंद महिला कॉलेज के हिंदी विभाग की तरफ से निराला एवं रैदास की जन्मशताब्दी पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। मंच संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन हिंदी की विभागाध्यक्ष डॉ. सुधा रंजनी ने किया। जय प्रकाश विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. दुर्ग विजय सिंह ने रैदास के व्यक्तित्व की खासियत बताते हुए कहा कि कबीर और रैदास एक ही परम्परा के संत थे। रैदास में कहीं भी अक्खड़ता नहीं दिखाई देता था। इनका स्वभाव काफी सरल था। प्राचार्य डॉ आभा सिंह ने शंकराचार्य एवं रामानुज से जोड़कर रैदास के बारे में बताया। प्रो. दिवाकर पाण्डेय ने निराला के जीवन संघर्ष और काव्य संघर्ष को बहुत ही बारीकी से बताया। सोनी कुमारी ने रैदास और निराला पर आलेख पत्र पढ़ा। मौके पर डॉ.लतिका वर्मा, डॉ.विजया लक्ष्मी, डॉ. निधि एवं डॉ. स्मिता सहित कई शामिल थे।

एक ही परंपरा के होते हुए भी कबीर व रैदास में था अंतर

एमएम महिला कॉलेज में सूर्यकांत त्रिपाठी निराला व रैदास की जयंती पर बोले पूर्व कुलपति, निराला के जीवन पर भी डाला गया प्रकाश

जासं, आरा : पूर्व कुलपति प्रो. दुर्गा विजय सिंह ने कहा कि कबीर व रैदास एक ही परंपरा के कवि थे। लेकिन दोनों में अंतर था। कबीर में अखड़पन प्रलक्षित होता था, वहीं रैदास की भाषा में विनम्रता व सरलता है। वैसे ही उनके रहन-सहन में भी देखी गई। प्रो. सिंह सोमवार को स्थानीय एमएम महिला कॉलेज के हिंदी विभाग द्वारा सूर्यकांत त्रिपाठी निराला व रैदास की जन्मशताब्दी पर आयोजित विशेष कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि विचार व्यक्त रहे थे। बताते चलें कि विगत 27 फरवरी को रैदास और 16 फरवरी को सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की जयंती थी। सर्वप्रथम समारोह की शुरुआत महंथ महादेवानंद की प्रतिमा पर माल्यार्पण से किया गया। वहीं कार्यक्रम की शुरूआत दीप जलाकर रैदास और सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की तस्वीर पर माल्यार्पण के साथ किया गया। विषय प्रवेश करने से पहले आगत अतिथियों का स्वागत प्राचार्या डॉ. आभा सिंह ने किया। बतौर मुख्य वक्त प्रो. दिवाकर पांडेय ने सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के निराले जीवन के विविध फलकों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि निराला की कविताएं अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाती हैं। वे समाज में व्याप्त प्रपंच व अंधविश्वास पर कुठाराघात करते दिखते हैं। उनकी कविताएं छायावाद से प्रगतिवाद की ओर अग्रसरित होने का संकेत देती है।

निराला व रैदास के जन्मशताब्दी पर व्याख्यान

आरा | निज प्रतिनिधि

वीर कुंवर सिंह विवि की अंगीभूत इकाई एमएम महिला कॉलेज के हिन्दी विभाग की ओर से निराला व रैदास की जन्मशताब्दी पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। शुरुआत महंथ महादेवानंद जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया।

इसके बाद प्राचार्या डॉ आभा सिंह ने कार्यक्रम के मुख्य वक्ता जेपी विवि सारण के पूर्व कुलपति प्रो दुर्ग विजय सिंह व डॉ शुभा सिंह ने विवि के भोजपुरी विभागाध्यक्ष प्रो दिवाकर पाण्डेय को मोमेंटो और बुके देकर सम्मानित किया। साथ ही रैदास और निराला के तैल चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की गई। हिंदी विभाग की आरशी कुमारी ने वर दे वीणा वादिनी वर दे सरस्वती वंदना (निराला) और प्रभु जी तुम चंदन हम पानी भजन (रैदास) का गायन किया। हिंदी विभाग की ही प्रिया कुमारी और सोनी कुमारी ने रैदास और निराला पंर आलेख पत्र पढ़े। प्राचार्या डॉ आभा सिंह ने कवि निराला की कविताओं और संत साहित्य पर प्रकाश डाला। प्रो दुर्ग विजय सिंह ने रैदास के व्यक्तित्व की खासियत बताते हुए कहा कि कबीर और रैदास एक ही परम्परा के संत थे लेकिन रैदास में कहीं भी अक्खड़ता नहीं दिखाई देती।

कार्यक्रम का उद्घाटन करते पूर्व वीसी डॉ दुर्गविजय सिंह, प्राचार्या डॉ आभा व अन्य।

प्रो दिवाकर ने निराला के जीवन संघर्ष और काव्य संघर्ष को बहुत ही बारीकी से बताया कौर कई संस्मरण सुनाये। उन्होंने जुही की कली के साथ ही निराला की कई कविताओं का पाठ किया। संचालन हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ सुधा रंजनी ने किया। कार्यक्रम में डॉ लतिका वर्मा, डॉ विजया लक्ष्मी, डॉ निधि, डॉ. स्मिता, डॉ मनोज कुमार, डॉ खुशबु, डॉ अनुपमा, छात्रा अनामिका आदि मौजूद थीं।

महिला कॉलेज में निराला व रैदास की जयंती मनी

संवाददाता, आरा

एमएम महिला कॉलेज के हिंदी विभाग द्वारा निराला एवं रैदास की जन्मशताब्दी पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया. विदित हो कि 27 फरवरी को रैदास जी की जयंती और 16 फरवरी (बसंत पंचमी) को सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की.

सर्वप्रथम महंत महादेवानंद जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया. तत्पश्चात प्रधानाचार्या डॉ आभा सिंह ने कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो दुर्ग विजय सिंह, पूर्व कुलपति का तथा डॉ शुभा सिंह ने प्रो दिवाकर पांडेय, भोजपुरी विभागाध्यक्ष, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय को मोमेंटो और बुके देकर अभिनंदन किया. इसके बाद औपचारिक रूप से कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन से की गयी. रैदास और निराला जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की गयी. हिंदी विभाग की आरशी कुमारी ने वर दे वीणा वादिनी वर दे सरस्वती वंदना और प्रभु जी तुम चंदन हम पानी भजन का गायन किया. हिंदी विभाग की ही प्रिया कुमारी और सोनी कुमारी ने रैदास और निराला पर आलेख पत्र पढ़ा. प्रधानाचार्या डॉ आभा सिंह ने स्वागत भाषण में दोनों ही वक्ता के कार्यक्षेत्र और उनके इस विषय में महत्वपूर्ण होने की बात को रेखांकित किया तथा संत साहित्य पर प्रकाश डाला. प्रो दुर्ग विजय सिंह ने रैदास के व्यक्तित्व की खासियत बताते हुए कहा कि कबीर और रैदास एक ही परंपरा के संत थे, लेकिन रैदास में कहीं भी अक्खड़ता नहीं दिखाई देती. प्रो दिवाकर पांडेय ने निराला के जीवन संघर्ष और काव्य संघर्ष को बहुत ही बारीकी से बताया. कई संस्मरण सुनाये. उन्होंने जूही की कली के साथ ही निराला की कई कविताओं का पाठ किया, जो प्रभावी और अविस्मरणीय है. हिंदी की विभागाध्यक्ष डॉ सुधा रंजनी ने कार्यक्रम का संचालन और धन्यवाद ज्ञापन किया. कार्यक्रम में डॉ लतिका वर्मा, डॉ विजया लक्ष्मी, डॉ निधि, डॉ स्मिता, डॉ मनोज कुमार, डॉ खुशबू, डॉ अनुपमा आदि समस्त शिक्षक गण और छात्राएं उपस्थित थीं.

महिला कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित अतिथि.